गुरसेवक सिंह रोड़की

ई—मेल-sandhurorki@gmail.com

संघर्ष

"अरे बेटा ! मुझे तो लगता उस तरफ अपनी गेहूं ही रह गई काटने को। सभी ने तो कब का मुका लिया ये काम इव तू भी कर कोई इंतजाम।" बाहर से आए बेटे जीते से बुढ़िया माँ ने खाट पर बैठे-बैठे ही कहा।

"माँ, अब तो नम्बरदार अपनी सारी काटकर ही मशीन देंगे।"

'तो तूने कहा नहीं कि हमारी भी कटा दो।"

"मैंने नम्बरदार के बड़े लड़के चरने से कहा था। जब वह अपने खोत का गेहूं काट रहे थे, भाई, मेरा भी यह डेढ़ एकड़ साथ ही कटाई करा दो।।

"फिर क्या कहा उसने?" माँ ने उम्मीद से पूछा।

'आगे से वह उल्टा ही बोला कहने लगा तुम बड़ा पाप लगे हो हर वक़्त पीछे ही पड़े रहते हो.. जहाँ तुम्हारे पिता ने इतनी बेच डाली, वहां तुम भी इसे बेच कर टंटा ही खत्म करो। न रहेगा बांस, न बजेगी बांसुरी.. तुम भी आराम से रहोगे और हम भी।" माँ यह सुनते ही मेरा कलेजा फट गया। मन तो करता था कि चरने का मुंह तोड़ दूँ. कंजर बोल भी रहा था और मूछों में से मुस्करा भी रहा था।

"बेटा किसी को क्या दोष दें, अपना बंदा ही गलत था, नशे में फूक गया सारी।"

"माँ सिर्फ शराब से ही इतनी जमीन नहीं खोई है, ये नम्बरदार बेईमानी करते रहे है वे सो रुपए देकर हजार लिखते रहे हैं।"

"चलो बेटा, कुछ भी है, अब आगे की सोचते है।"

"माँ, मैं तो कहता हूँ, इसको बेचकर पूरी कीमत वसूल लेते हैं, मैं बाहर चला जाऊंगा और कहीं नहीं तो दुबई तो चला ही जाऊंगा अन्यथा वे मुझे किसी न किसी केस में फंसा ही लेंगे तब वे जमीन कौड़ीओं के भाव खरीदेंगे। चारों ओर तो खरीद ली है इन्होंने।"

माँ ने आह भरते हुए कहा, "तेरी बात सही है बेटा, लेकिन बुजर्ग कहते हैं, 'शरीक उजड़ने पर, आँगन खाली हो जाता है' इस तरह भागने से तो बात नहीं बनेगी।" ये कहते हुए वो हिम्मत करके बिस्तर से उठी और अपने बेटे के हाथ में देने के लिए अंदर एक दरांती उठा लाई।

हिन्दी अनुवाद : जगदीश राय कुलरियाँ

गुरसेवक सिंह रोड़की : गुरसेवक सिंह रूड़की एक युवा पंजाबी लघुकथाकार हैं। इनका पंजाबी में एक लघुकथा संग्रह प्रकाशित हो चुका है। इनकी रचनाएँ विभिन्न संपादित पुस्तकों में शामिल होने के अलावा बांग्ला, मराठी, हिंदी और शाहमुखी भाषाओं में अनुवाद भी हुई है।